इकाई 4 बौद्धिक प्रवृत्तियाँ*

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य

4.1 प्रस्तावना

4.2 प्रबोधन काल

4.3 उदारवाद

4.3.1 उपयोगितावाद

4.3.2 अहस्तक्षेप की नीति

4.4 समाजवाद

4.5 सारांश

4.6 शब्दावली

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

4.0 उद्देश्य

यह इकाई आपको उन नई विचारधाराओं से परिचित कराएगी जो सोलहवीं के मध्य तथा उन्नीसवीं शताब्दी के मध्य में विकसित हुई। इस इकाई के अध्ययन के उपरांत आपः

- ज्ञानोदय से जुड़े अर्थों और विचारों की व्याख्या कर सकेंगे;
- उदारवाद की संकल्पना, उपयोगितावादियों के विचारों तथा अहस्तक्षेप की नीति के सिद्धांत के बारे में सीख सकेंगे; और
- आरंभिक समाजवादी विचारों के विकास का विवरण दे पायेंगे।

4.1 प्रस्तावना

अठारहवीं शताब्दी के मध्य और उन्नीसवीं शताब्दियों के मध्य के बीच में कई विचारकों एवं लेखकों ने अपने विचारों और लेखन द्वारा यूरोप के सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक विकास को बेहद प्रभावित किया। दर्शनशास्त्र, साहित्य, कला और विज्ञान के क्षेत्र में हुए विकास ने यूरोपीय चेतना को एक नया मोड़ दिया और आधुनिकतावाद की शुरुआत की आधारशिला रखी। इतिहासकार केवल अमरीकी क्रांति (1776) तथा फ्रांसीसी क्रांति (1789) को ही आधुनिक यूरोप के आरंभ की वजह नहीं मानते। अपितु यह वह समय था जब यूरोप में एक नई बौद्धिक संस्कृति का जन्म होता है जिससे लोगों के सोचने के तरीकों में उल्लेखनीय बदलाव आए। इस अवधि के दौरान यूरोप में हुई राजनीतिक क्रांतियां काफी हद तक एक नई बौद्धिक चेतना से प्रभावित थीं। औद्योगिक क्रांति, जो कि अठारहवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम इंग्लैण्ड में प्रांरभ हुई, ने तत्कालीन सामाजिक और आर्थिक संरचना पर दूरगामी प्रभाव डाला तथा बुद्धिजीवियों के एक वर्ग द्वारा गरीब लोगों की दुर्दशा पर कड़ी प्रतिक्रिया व्यक्त की गई। इस इकाई में हम आपका परिचय नई विचारधाराओं के विकास और कुछ प्रमुख विचारकों से कराएंगे तथा यह भी बताएंगे कि किस प्रकार से उनके विचारों ने प्रचलित सत्ताधारी संस्थाओं को चुनौती दी तथा विचारधाराओं के क्षेत्र में क्रांति की शुरुआत की।

*प्रो. स्वराज बासु, इतिहास संकाय, सामाजिक विज्ञान विद्यापीठ, इग्नू, नई दिल्ली

4.2 प्रबोधन काल

प्रबोधन काल संबंधी विचारों की शुरुआत का समय सत्रहवीं शताब्दी थी, जब हॉब्स ने अपनी पुस्तक 'लेवियाथन' में वैज्ञानिक निरीक्षण तथा तर्कवाद के आधार पर एक नई राजनीतिक व्यवस्था की रूपरेखा प्रस्तुत की। अठारहवीं शताब्दी उस मध्य वर्ग और उच्च वर्ग के बीच नवीन जागरण की साक्षी बनी जो एक नई सामाजिक शक्ति के रूप में उभरा। यह विश्वास किया जाता है कि आर्थिक समृद्धि, तकनीकी प्रगति तथा छपाई की नई तकनीकी का नए विचारों के प्रचार-प्रसार पर बड़ा प्रभाव पड़ा। एक ऐसे युग में जब सरकार अथवा चर्च के बारे में प्रश्न करना भी सोच की सीमा से परे तथा दण्डनीय था, प्रबोधन युग के विचारकों ने राजशाही तथा दृढ़-स्थापित चर्च की प्रचलित संस्थाओं की आलोचना की। उन्होंने शक्ति के दुरुपयोग को समाप्त करने तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता के प्रसार हेतु व्यापक सुधारों का प्रस्ताव रखा। वे निरपेक्ष राजतंत्र के आलोचक थे तथा उन्होंने सरकार, अर्थव्यवस्था और धर्म के बारे मे नवीन विचारों का सूत्रपात किया। ईसाई मिथकों को नए वैज्ञानिक, तर्कसंगत तरीकों द्वारा प्रतिस्थापित कर दिया गया। उन्होंने धर्म को वैज्ञानिक पद्धति द्वारा चुनौती दी और यह विश्वास व्यक्त किया कि तर्क और विज्ञान जीवन को सुधारेंगे। तर्क, युक्ति और आलोचना के जरिये मानवीय प्रगति इनका लक्ष्य था। राजतंत्र के दैवीय अधिकार की धारणा पर आक्रमण हुए। धर्म और प्रथा पर आधारित प्रचलित आचार व्यवस्थाओं के स्थान पर प्रबोधन कालीन सोच ने तर्क आधारित आचार व्यवस्था को महत्व दिया। 1784 में लिखे एक निबंध प्रबोधन क्या है? में इमैनुअल कांट ने प्रबोधन को अज्ञान के विरुद्ध एक विद्रोह के रूप में परिभाषित किया और उसका विश्वास था कि 'मुझमें जानने का साहस है' और इस समझ का उपयोग करने का साहस ही समाज को निर्देशित करने वाली चेतना होनी चाहिए। कांट ने लिखा, ''इस प्रबोधन के लिए स्वतंत्रता के सिवाय कुछ नहीं होना चाहिए और सबसे सीधी-साधी चीज जिसे 'स्वतंत्रता' कहा जा सकता है वह है: सभी मामलों में अपनी तर्क-शक्ति का सार्वजनिक उपयोग।'' अठारहवीं शताब्दी के दार्शनिकों और विचारकों के मध्य सर्वमान्य विचार था कि ईश्वर के एक शब्द के बिना विश्व कार्य करता है। उनका यह विश्वास था कि समुचित शिक्षा और तर्क-शक्ति के उपयोग में वह क्षमता है जो ईसाई धर्मशास्त्रों के प्रभुत्व में अब तक रहे मानव मस्तिष्क को मुक्त कर सकती है। परंपरा से प्राप्त सभी विचारों और मूल्यों को प्रश्नांकित करने की सोच प्रबल थी। चार्ल्स–दे–मोंतेस्क्यू, देनिस दिदरो, वोल्तेयर तथा जाँ जैक रूसो प्रबोधन के महान प्रतिपादक थे तथा इनके कार्यों ने यूरोप में नए विचारों के विकास को अत्यधिक प्रभावित किया। एक नवीन विश्व दृष्टि ने आकार लिया। तथापि, इस बात पर ध्यान देना भी आवश्यक है कि प्रबोधन कालीन विचारकों का तर्क-शक्ति पर जोर देना एक साझा प्रवृत्ति थी परन्तु उनकी दृष्टियों में काफी अंतर भी था। आइए, आपको कुछ महान प्रबोधन कालीन विचारकों की धारणाओं से परिचित कराएं।

मोंतेस्क्यू (1689-1755) का जन्म बोर्डो के पास गुयेन में एक प्रांतीय कुलीन कानूनी परिवार में हुआ था। यद्यपि, उन्होंने अपना पेशा एक वकील के रूप में शुरू किया, परंतु अलग-अलग विषयों को सीखने तथा विभिन्न सभ्यताओं को समझने में उनकी खास रुचि थी। उनका सर्वाधिक महत्वपूर्ण कार्य, *'दि स्पिरिट ऑफ लॉज़'* (*The Spirit of Laws*) जो 1848 में प्रकाशित हुआ, उसमें दो हज़ार से अधिक संदर्भ तथा विषयों की व्यापक विविधता थी जो सीखने के प्रति उनकी रुचि और उनके व्यापक ज्ञान को इंगित करता है। वे विधिवेत्ता, राजनीतिक दार्शनिक और सामाजिक आलोचक थे। मोंतेस्क्यू लूई XIV के शासन के दौरान पले-बढ़े जिसने 1643 से 1715 तक राज्य किया तथा जिन्हें यूरोप के सर्वाधिक निरंकुश शासकों में से एक माना जाता था। वे राजनीति, अर्थशास्त्र एवं धर्म के

मध्य संबंधों को समझने में सक्षम थे। उन्होंने निरंकुश सम्राटों द्वारा 'दैवीय अधिकार' के सिद्धांत की वकालत को सिरे से खारिज कर दिया। उनकी प्रमुख चिंता थी कि किस प्रकार तानाशाही से बचा जाए और स्वतंत्रता को सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने लिखा, –

''वे अधिकाधिक लोग निरंकुशता द्वारा शासित हैं, क्योंकि किसी अन्य प्रकार की किसी उदारवादी सरकार के लिए राजनीतिक शक्तियों के सर्वाधिक गहन संतुलन और विनियमन के ज़रिए अत्यंत ही कार्य कुशल प्रबंधन और नियोजन की आवश्यकता होती है। दूसरी तरफ निरंकुशता एकरूपीय और साधारण है। इसे स्थापित करने के लिए सिर्फ जुनून की ज़रूरत है।''

'दि स्पिरिट ऑफ लॉज' में मोंतेस्क्यू ने सरकारी संस्थाओं का तुलनात्मक विश्लेषण किया। उनके मतानुसार परिस्थितियों के अनुसार सरकार के प्रकार भिन्न-भिन्न हो सकते हैं। उन्होंने राजनीतिक शक्तियों के कार्यपालिका, विधायिका और न्यायपालिका के रूप में अलग-अलग शाखाओं में पृथक्करण के द्वारा राजनीतिक स्वतंत्रता की वकालत की। शक्तियों के पृथ्क्करण की परिकल्पना किसी एक जगह या किसी एक हाथ में शक्ति के केन्द्रीकरण को रोकने हेतु की गई थी जो अंततः उत्पीड़न का कारण बन सकती थी। उन्होंने लिखा, 'सच्ची प्राकृतिक दशा में दरअसल, सभी मनुष्य समान पैदा हुए हैं, परंतु वे इस समानता में हमेशा नहीं रह सकते। समाज उन्हें इससे वंचित करता है, और वे इसे पुनः कानून की सुरक्षा के जरिये ही प्राप्त कर सकते हैं।' *दि स्पिरिट ऑफ लॉज़'* ने तत्कालीन राजनीतिक विचारों को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपने विचारों तथा स्वतंत्रता के समर्थन द्वारा मोंतेस्क्यू के विचारों ने 18वीं सदी के अवसान के समय हुई दो महान क्रांतियों (अमरीकी क्रांति और फ्रांसीसी क्रांति) को प्रेरणा प्रदान की। यह तर्क दिया जाता है कि जेफरसन द्वारा की गई स्वतंत्रता और मानव अधिकारों की घोषणाएं मोतेंस्क्यू के विचारों से ही प्रेरित थीं।

वोल्तेयर (1694-1778) पेरिस में पैदा हुए थे तथा धार्मिक स्वतंत्रता, सहिष्णुता और नागरिक स्वतंत्रता के समर्थक थे। वे दार्शनिक जॉन लॉक तथा वैज्ञानिक सर आइज़ैक न्यूटन के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने धार्मिक हठधर्मिता, असहिष्णुता तथा सरकारी आचरणों के विरुद्ध आवाज़ उठाई। अपने निबंध *'एसे अपॉन दि सिविल वॉर्स इन फ्रांस'* में उन्होंने धार्मिक संस्थाओं की असहिष्णुता पर प्रहार किया और राज्य तथा चर्च के पृथक्करण का प्रस्ताव रखा। राजनैतिक तथा सैन्य इतिहास को दिए गए महत्व तथा उसकी धार्मिक रूपरेखा को नकारते हुए वोल्तेयर ने सांस्कृतिक इतिहास तथा कलाओं और रीति-रिवाजों आदि के इतिहास पर बल दिया। उनकी रचनाएं *'दि एज ऑफ लुई XIV'* (1751) तथा *'एस्से ऑन दि कस्टम्स एण्ड दि स्पिरिट ऑफ दि नेशन्स'* (1756) उस प्रचलित इतिहास लेखन से अलगाव का द्योतक है, जो युद्धों और महान व्यक्तियों के कार्यों से भरा पड़ा था। *'अ ट्रिटाइज़ ऑन टोलरेशन'* (1763) में उन्होंने परम शक्ति के अस्तित्व से इनकार नहीं किया परन्तु आस्था के स्थान पर उन्होंने ईश्वर को समझने के लिये तर्क-शक्ति पर ज़ोर दिया। वे धर्म के संस्थानीकरण के विरुद्ध थे और उन्होंने इस बात की वकालत की कि धर्म के अंतर के बावजूद सभी भाई-भाई हैं। उन्होंने लिखा, 'जब तक लोग अपनी स्वतंत्रता के अनुपालन पर ध्यान नहीं देंगे तब तक जो उत्पीड़न करना चाहते हैं, वे करते रहेंगे; क्योंकि उत्पीड़क सक्रिय और उत्साह से भरे होते हैं तथा सोते हुए मनुष्यों पर बेड़ियां डालने हेतु कितने भी धर्मों और ईश्वरों के नाम पर स्वयं को समर्पित कर देंगे।' अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर लिखते हुए वह कहते हैं कि 'यह पागलपन की हद होगी यदि यह ढोंग किया जाए कि संपूर्ण मानवजाति तत्वमीमांसा के बारे में एक ही सोच रख सकती है। किसी एक गाँव के सभी निवासियों के मस्तिष्क को अधीन करने की तुलना में हम शायद, ज्यादा

आसानी से, संपूर्ण ब्रह्मांड पर शस्त्रों की शक्ति के ज़रिए विजय प्राप्त कर सकते हैं'। विचारों की स्वतंत्रता तथा धार्मिक सहिष्णुता के प्रति उनकी लड़ाई ने कैथोलिक चर्च के प्राधिकारियों को नाराज कर दिया था।

रूसो (1712-1778) का जन्म जेनेवा में हुआ था परन्तु बाद में वे पेरिस चले गए। उनकी सर्वाधिक प्रभावशाली रचनाएं हैं– *दि सोशल कान्ट्रैक्ट* (1962) और *'एमिली'* (1762)। रूसो के मतानुसार मनुष्य उत्तम पैदा हुआ था, परंतु बाद में समाज की बुराइयों ने उसे भ्रष्ट बना डाला। राजनीतिक सिद्धांत पर लिखते हुए वे यह कहते हुए शुरुआत करते हैं, 'मनुष्य स्वतंत्र पैदा हुआ था, अब वह चारों तरफ बंधनों में जकड़ा है'। उन्होंने एक सामूहिक 'सामान्य इच्छा' की बात की जो सभी व्यक्तियों के सामान्य हित का प्रतिनिधित्व करती है और सभी नागरिकों को इस सामान्य हित के प्रति प्रतिबद्ध होना चाहिए, सामान्य इच्छा अथवा सामूहिक हित के लिए व्यक्तिगत इच्छा एवं हित का बलिदान कर दिया जाना चाहिए। उन्होंने लिखा 'हममें से प्रत्येक ने उसके व्यक्तित्व और उसकी समस्त शक्तियों को सामान्य इच्छा के सर्वोच्च निर्देशन के अधीन साझा कर दिया और हमारी समष्टिगत क्षमता में हम प्रत्येक सदस्य को संपूर्ण के एक अविभाज्य भाग के रूप में ग्रहण करते हैं।' यह स्वतंत्रता, समानता और बंधुत्व के प्रचार-प्रसार में सहायक है। *'ए डिस्कोर्स ऑन इनइक्वैलिटी'* में उन्होंने यह दर्शाया कि सभ्यता के विकास के साथ-साथ किस प्रकार धन, शक्ति और सामाजिक विशेषाधिकारों ने आधुनिक समाज में असामानता निर्मित की है। उनका विश्वास था कि एक अच्छी सरकार के सर्वप्रमुख मूलभूत उद्‌देश्य के रूप में उसके समस्त नागरिकों की स्वतंत्रता का स्थान होना चाहिए। कानून राज्य के समस्त सदस्यों पर समान रूप से लागू होना चाहिए और यह सुनिश्चित किया जाना चाहिए कि व्यक्तिगत स्वतंत्रता बनी रहे। यह कहा जाता है कि फ्रांसीसी क्रांति की विचारधारा की प्रमुख प्रेरणा रूसों के विचारों से ही मिली।

दिदरो (1713-1784) फ्रांसीसी दार्शनिक और प्रबोधनकालीन प्रमुख विचारकों में से एक थे। वह सर्वप्रथम 28 भागों में विश्वकोश (Encyclopedia) संपादित एवं प्रकाशित करने के लिए जाने जाते हैं। विश्वकोश सिर्फ लेखों का संकलन नहीं था बल्कि एक ऐसा सार-संग्रह था जिसको लोगों के सोचने के तरीके को बदलना था। यह कहा गया कि *'दि इनसाइक्लोपीडिया'* ने फ्रांसीसी प्रबोधन की भावना को समाहित किया। निरंकुशता की आलोचना और लोकतंत्र पर दिए गए बल ने फ्रांसीसी क्रांति के कारणों में अत्यधिक योगदान दिया। *दि इनसाइक्लोपीडिया* में सामाजिक, राजनीतिक, कला, धर्म एवं विज्ञान से संबंधित मुद्दों को शामिल किया गया। इनसाइक्लोपीडिया के लेखन द्वारा वह सरकारी तथा धार्मिक प्रतिष्ठानों के दुरुपयोग के विरुद्ध जनमत का निर्माण करना चाहते थे। वह चर्च से असहमत होने से भी नहीं हिचके। उन्होंने ईश्वर के अस्तित्व पर तो प्रश्न नहीं उठाए परन्तु लिखा कि 'सच्चे ईश्वर की आराधना करने का तरीका यह होना चाहिए कि हम तर्क-शक्ति से कभी न भटकें, स्वयं ईश्वर की भी इच्छा है कि उसके प्रति क्या करना चाहिए और क्या नहीं करना चाहिए इसका निर्णय करने के लिए भी इसका (तर्क-शक्ति का) उपयोग होना चाहिए।'

उपर्युक्त वर्णनों के आधार पर हम यह समझ सकते हैं कि किस प्रकार विचारकों ने परंपरा, निरंकुशता और धर्म के नाम पर हो रहे गलत कार्यों के विरुद्ध युद्ध छेड़ा। अपनी रचनाओं के जरिए उन्होंने लोगों को नए वैज्ञानिक विचारों तथा तर्क-शक्ति, सहिष्णुता तथा समानता एवं स्वतंत्रता के मूल्यों के प्रति जागरूक करने की कोशिश की। 1789 की फ्रांसीसी क्रांति को तर्कवाद और समतावाद पर आधारित नई राजनीतिक व्यवस्था के निर्माण की प्रबोधनकालीन दृष्टिकोण की परिणति माना जाता है।

बोध प्रश्न 1

1) उपर्युक्त उल्लिखित विचारकों द्वारा लिखित पुस्तकों की एक सूची बनाइए।

....

....

....

....

....

2) प्रबोधनकालीन विचारकों के मुख्य योगदान के बारे में संक्षेप में लिखिए।

....

....

....

....

....

4.3 उदारवाद

20वीं सदी के उदारवाद की तुलना में, अठारहवीं सदी के उत्तरार्ध और उन्नीसवीं सदी के मध्य के उदारवाद को 'शास्त्रीय उदारवाद' के रूप में वर्णित किया गया। उदारवाद के लिए आंदोलन ने एक विशेष ऐतिहासिक संदर्भ में जोर पकड़ा तथा जॉन लॉक के विचारों का शास्त्रीय उदारवाद के विकास में प्रमुख योगदान था। लॉक की दृष्टि में व्यक्तियों के कुछ विशेष मौलिक अधिकार होते हैं, जैसे– जीवन, स्वतंत्रता तथा संपत्ति का अधिकार, जिन्हें प्राकृतिक अधिकारों के रूप में भी वर्णित किया जाता है। शास्त्रीय उदारवाद ने राज्य की शक्तियों को सीमित करके तथा संपत्ति के अधिकार को व्यक्तिगत स्वतंत्रता के एक आवश्यक घटक के रूप में मान्यता देते हुए इसके द्वारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता को महफूज करने पर प्राथमिक रूप से जोर दिया। यहाँ पर लॉर्ड एक्टन द्वारा व्यक्तिगत स्वतंत्रता की दी हुई परिभाषा को उद्धृत करना उचित होगा। 'स्वतंत्रता से मेरा अभिप्राय इस आश्वासन से है कि प्रत्येक व्यक्ति की इस बात के लिए सुरक्षा की जाएगी कि वह सत्ता प्रतिष्ठान, रीति-रिवाज और मत के प्रभाव के विरुद्ध अपने कर्त्तव्यों में विश्वास करता है।' एक्टन का विश्वास था कि स्वतंत्रता की सुरक्षा 'उच्चस्तरीय राजनीतिक उद्देश्य है।' शास्त्रीय उदारवादियों ने इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की वकालत की जिसमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता अधिकतम की जा सके। मार्क्सवादी इतिहासकार ई. जे. हॉब्सबाम ने लिखा' शास्त्रीय उदारवाद के लिए मानव संसार स्वनिहित व्यक्तिगत अणुओं से बना है जिनकी कुछ विशिष्ट अंतर्निहित भावनाएँ तथा रुचियाँ हैं, जिनमें प्रत्येक सबसे बढ़कर यह इच्छा रखते हैं कि वे अपनी संतुष्टि को अधिकाधिक बढ़ा सकें और अपनी असंतुष्टि को कम–से–कम कर सकें, इसमें वे सबके बराबर हो सकें तथा "स्वाभाविक" रूप से उनकी तृष्णाओं पर कोई बाधा न हो और उसमें दखल देने का किसी को कोई अधिकार न हो।' अतः, एक तार्किक आचरण की आवश्यकता है जो दूसरों के प्रति व्यक्ति के कर्त्तव्य तथा दायित्व को सुनिश्चित कर सके। यह कहा गया कि उदारवादी राज्य और सरकारी हस्तक्षेप के प्रति संदेहास्पद दृष्टिकोण रखते थे। यह एक ध्यान देने की बात है कि सभी उदारवादी व्यक्तिगत संपत्ति के अधिकार में विश्वास रखते हैं। शास्त्रीय उदारवादियों के विचार से

स्वतंत्रता तथा संपत्ति का अधिकार एक दूसरे से मूलभूत रूप से जुड़े हुए हैं। स्वतंत्रता का अर्थ है कि किसी को यह आजादी हो वह अपना जीवन अपनी इच्छा के अनुसार जी सके, वह अपनी मेहनत और अपनी पूँजी का जैसा उचित समझे, उपयोग कर सके। कुछ उदारवादी तो यह भी जोर देते हैं कि व्यक्तिगत संपत्ति स्वतंत्रता की रक्षा की एक जरूरी शर्त है। इस तर्क का प्रमुख आधार यह है कि मुक्त बाजार अर्थव्यवस्था में जो व्यक्तिगत संपत्ति की सुरक्षा पर आधारित है; शक्तियों का विसर्जन व्यक्तिगत स्वतंत्रता की रक्षा करता है तथा राज्य को अपनी सीमाओं में रखता है। अमरीकी क्रांति, फ्रांसीसी क्रांति तथा इंग्लैंड में 19वीं शताब्दी के आरंभ में हुए राजनीतिक क्रियाकलाप उदारवादी राजनीतिक विचारधारा के प्रयोगों का उचित प्रतिनिधित्व करते हैं। अब हम आपके सामने उदारवादी विचार के दो प्रमुख सिद्धांतों उपयोगितावाद और अहस्तक्षेप-नीति की व्याख्या करेंगे।

4.3.1 उपयोगितावाद

उपयोगितावाद को एक ऐसे दर्शन के रूप में परिभाषित किया जाता है जिसका विश्वास है कि यह प्रसन्नता को अधिकाधिक करने में संपूर्ण उपयोगिता ही है जो अकेले किसी कार्य के मूल्य का निर्धारण करती है। भविष्य के किसी भी क्रियाकलाप को भूत के उस क्रियाकलाप का अनुसरण करना चाहिए जिसने सर्वाधिक जनसंख्या को सर्वाधिक प्रसन्नता दे। वह सरकार जो सर्वाधिक जनसंख्या को सर्वाधिक प्रसन्नता/हित दे पाये वह सर्वश्रेष्ठ सरकार थी। उपयोगितावाद ने मानवीय प्रसन्नता तथा इसे जारी रखने की स्वतंत्रता के दर्शन के रूप में शुरुआत की। जेरेमी बेन्थम (1748-1832) उपयोगितावादी दर्शन के संस्थापक थे। उन्होंने कहा कि निराधार धार्मिक विश्वासों और अविश्वसनीय परंपराओं के स्थान पर उपयोगितावाद मानवीय व्यवहार के वस्तुनिष्ठ अध्ययन पर बल देता है। मानवीय उपयोगिता एकमात्र स्वाभाविक हित है जिसके समकक्ष कार्यों का मूल्यांकन किया जा सकता है। हॉब्स द्वारा दिया गया मानवीय प्रकृति का विचार तथा ह्यूम के सामाजिक उपयोगिता के विचार ने बेन्थम के विचार को प्रभावित किया। समकालीन समाज की समस्याओं ने बेन्थम को उपयोगिता की खोज के लिए प्रेरित किया। जब उन्होंने नैतिकता के संबंध में अपने दृष्टिकोण को विकसित किया, तब उभरते हुए औद्योगिक समाज की आवश्यकताएं उनके मस्तिष्क में थीं। बेन्थम एक उत्साही राजनीतिक सुधारक थे। वे पारंपरिक नैतिकता के विरुद्ध थे। उनकी इच्छा थी कि भ्रष्ट कानूनों तथा सामाजिक प्रचलनों को परिवर्तित किया जाए। अपने कार्य *'इन्ट्रोडक्शन टू दि प्रिंसिपल्स ऑफ मोरल्स एण्ड लेजिसलेशन* (1789)' में उन्होंने कानूनी और राजनीतिक संस्थाओं की आलोचना की। उपयोगिता के सिद्धांत के आधार पर बेन्थम ने विधायी कार्यों हेतु एक तार्किक दृष्टिकोण प्राप्त करने का प्रयास किया। 1776 में अपने पहले प्रकाशन जिसका शीर्षक था *'ए फ्रैगमेन्ट ऑन गवर्नमेन्ट'*, में बेन्थम ने अपनी विचारधारा के लक्ष्य को यह कहते हुए निर्धारित किया कि 'अधिकाधिक लोगों की अधिकाधिक प्रसन्नता ही सही और गलत का मापदंड है।' बेन्थम का अवलोकन था कि मनुष्य आनंद और पीड़ा द्वारा शासित थे तथा वे 'जो सब कुछ हम करते हैं, जो सब कुछ हम बोलते हैं, जो सब कुछ हम सोचते हैं, द्वारा हमें शासित करते हैं।' उन्होंने व्यक्तिगत स्वतंत्रता, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता तथा राज्य और चर्च के पृथक्करण करने की वकालत की।

जॉन स्टुअर्ट मिल (1806-1873) जो जेम्स मिल के पुत्र थे, उपयोगितावादी दर्शन के साथ ही पले-बढ़े और बेन्थम से प्रभावित थे। मिल उस अंग्रेजी समाज के आलोचक थे, जिसमें वास्तविक वैयक्तिकता का पनपना असंभव था। उन्होंने लिखा, 'हमारे समय में समाज के उच्चतम वर्ग से लेकर निम्नतम वर्ग तक सभी व्यक्ति प्रतिकूल एवं खूंखार सेंसरशिप के साये में रह रहे हैं।' वे व्यक्तिगत स्वायत्तता, नागरिक स्वतंत्रता, रचनात्मकता और वैयक्तिकता

के रक्षक थे। उनके अनुसार किसी की इच्छा के विरुद्ध शक्ति का प्रयोग सिर्फ दूसरों के नुकसान को रोकने हेतु ही किया जा सकता है। 1859 में लिखित अपने निबंध 'ऑन लिवर्टी' में उन्होंने कहा कि 'इस निबंध का प्रमुख बिंदु इस बात की वकालत करना है कि किसी व्यक्ति की स्वतंत्रता को सीमित करने, चाहे वह सरकार द्वारा हो अथवा जनमत की शक्ति द्वारा, का समाज के लिए औचित्य यही हो सकता है कि इसके ज़रिये दूसरों के नुकसान को रोका जाए। यदि इसके बजाय इसका उद्देश्य स्वयं उसका भला करना या कुछ और हो, तो सिर्फ समझाने, राजी करने और बिना बल प्रयोग के तरीकों को ही जायज़ माना जा सकता है। अंततः इसका या किसी अन्य मानक दावे का बचाव उपयोगितावाद के सिद्धांत पर ही टिका है, कि यह इससे प्रभावित होने वाले सभी के लिए कम कष्ट तथा अधिक आनन्द उत्पन्न करता है।' उपयोगितावाद की व्याख्या करते हुए उन्होंने लिखा 'वह पन्थ जो नैतिकता, उपयोगिता अथवा अधिकतम प्रसन्नता के सिद्धांत को आधारशिला के रूप में स्वीकार करता है, इस बात पर यकीन रखता है कि क्रियाकलाप उस अनुपात में सही हैं यदि वे प्रसन्नता को बढ़ावा दें, और गलत हैं यदि वे प्रसन्नता के प्रतिलोम को उत्पन्न करें।' प्रसन्नता में शामिल है – अधिकाधिक आनन्द का अनुभव और पीड़ा की अनुपस्थिति। मिल न्याय की संकल्पना के बारे में काफी चिंतित थे और उन्होंने वकालत की कि 'किसी को उसकी स्वतंत्रता और संपत्ति के कानूनी अधिकार से वंचित करना, किसी को उस चीज़ से वंचित करना जिस पर उसका नैतिक अधिकार है, यह अन्याय है।' उनका विश्वास था कि स्वतंत्र विचार और स्वतंत्र वक्तव्य स्वतंत्रता को सुनिश्चित करेंगे तथा लोकतंत्र राजनीतिक संस्थाओं को मजबूत बनाएगा। सरकार को न सिर्फ प्रभावी ढंग से कार्य करना चाहिए, अपितु इसे नागरिकों की भलाई के लिए भी कार्य करना चाहिए। उपयोगितावाद एवं स्वतंत्रता पर मिल के लेखन ने उच्च वर्ग के प्रभुत्व को चुनौती दी तथा सबके हित/प्रसन्नता की आवाज़ उठाई।

उपयोगितावादी दर्शन में प्रसन्नता एक व्यक्ति का सर्वोच्च लक्ष्य था तथा अधिकाधिक जनसंख्या हेतु अधिकाधिक प्रसन्नता वह चरम लक्ष्य था, जिसे समाज को प्राप्त करना था। पारंपरिक संस्थाओं को दी गई इसकी चुनौती तथा वैयक्तिक स्वतंत्रता के प्रति इसकी चिंता ने उपयोगितावाद को मध्य वर्ग के एक बड़े भाग की प्रबल विचारधारा बना डाला।

4.3.2 अहस्तक्षेप की नीति

सामंतवाद और वाणिज्यवाद के सिद्धांत के विरोध में, जो व्यापार प्रतिबंध, वस्तु के सरकारी विर्नियमन और न्यूनतम मजदूरी कानूनों में विश्वास करते थे, अहस्तक्षेप की नीति या स्वतंत्र व्यापार का दर्शन 18वी शताब्दी के अंत के यूरोप में विकसित हुआ। मुक्त अर्थव्यवस्था में विश्वास करने वालों का यह मत था कि अत्याधिक विनियमन स्वस्थ प्रतिस्पर्धा को रोकता है और आर्थिक विकास के विरुद्ध कार्य करता है। अहस्तक्षेप की नीति के आरंभिक प्रतिपादक फ्रांस के फिज़ियोक्रेट्स थे। फिज़ियोक्रेट्स 18वीं शताब्दी के उत्तरार्ध के दौरान फ्रांस में रहने वाले अर्थशास्त्रियों का एक समूह था। वाणिज्यवादियों द्वारा किए जाने वाले व्यापार पर ज़ोर देने के विपरीत फिजियोक्रेट्स राष्ट्र की संपत्ति के आर्थिक आधार के रूप में व्यापार की जगह कृषि में विश्वास करते थे। वे वाणिज्य के विनियमन और संरक्षण शुल्क के विरुद्ध थे। उन्होंने वकालत की कि व्यक्तिगत हित अर्थव्यवस्था में दिशा-निर्देशक शक्ति है तथा ऐच्छिक लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति के प्रयासों के ऊपर बंधन नहीं होने चाहिए। उन्होंने भूमिकर को भी तार्किक बनाना चाहा। उनके विचार शक्तिशाली थे और उन्होंने वाणिज्यवाद के सिद्धांत के विरुद्ध शास्त्रीय अर्थव्यवस्था के विकास को प्रभावित किया। एक फ्रांसीसी अर्थशास्त्री, फ्रैंककुआ क्विने (1694-1774) फिज़ियोक्रेटिक चिंतन के संस्थान के संस्थापक थे। स्कॉटिश दर्शनशास्त्री एडम स्मिथ (1723-1790) को मुक्त व्यापार की नीति

का सबसे महत्वपूर्ण विचारक माना जाता था। क्विने के आर्थिक विचारों से प्रभावित होकर, एडक स्मिथ ने मुक्त अर्थव्यवस्था और पूँजीवाद के लिए तर्क दिए। 1776 में प्रकाशित अपनी पुस्तक *'वेल्थ ऑफ नेशनस'* में स्मिथ ने वाणिज्यवादियों के इस तर्क का खंडन किया कि संरक्षण शुल्क किसी राष्ट्र के आर्थिक हितों की रक्षा करते हैं। सामंतवाद ने यूरोप में उदीयमान औद्योगिक बुर्जुआ पर कई नियंत्रण लगाए। स्मिथ ने सांमती नियंत्रण के विरुद्ध संघर्ष हेतु बुर्जुआ को एक दार्शनिक घोषणापत्र प्रदान किया। स्मिथ के अनुसार संपत्ति की इच्छा मानवीय गतिविधियों को नियंत्रित करती हैं। स्वहित अथवा मुनाफा ही व्यक्ति द्वारा किए गए किसी कार्य के पीछे की चालक शक्ति है। उन्होंने लिखा कि 'वह कसाई, शराब बनाने वाले अथवा ब्रेड बनाने वाले की परोपकारिता नहीं है जिससे हम अपने डिनर की अपेक्षा रखते हैं, अपितु उनके स्वहित के प्रति हमारा सम्मान है।' परन्तु किस प्रकार व्यक्ति की स्वार्थी इच्छाएं समाज के लिए लाभदायक हो सकती हैं? इसके लिए उनका उत्तर है कि अपने स्वहित को जारी रखते हुए व्यक्ति अप्रत्यक्ष रूप से समाज की भलाई में योगदान करते हैं। व्यक्तियों के बीच प्रतिस्पर्धा व्यक्ति की लाभ हेतु लोलुपता पर नियंत्रण करती है। सरकारी विनियमन तथा नियंत्रण के बजाय यह बाजार है जो व्यापार का निर्धारण करता है। उन्होंने एकाधिकार की समाप्ति तथा मुक्त व्यापार की वकालत की। स्मिथ ने कृषि जो फिजियोक्रेट्स की मतानुसार संपत्ति का प्रमुख स्रोत था के स्थान पर विनिर्माण पर जोर दिया। पहली बार स्मिथ ने ही श्रम-शक्ति के विभाजन और श्रमिकों की उत्पादन क्षमता में सुधार हेतु श्रम के विशिष्टीकरण की बात की। उनके विचारों ने आर्थिक चिंतन में शास्त्रीय पंरपरा की शुरुआत की तथा उन्होंने जो मुद्दे उठाए, वे काफी लंबे समय तक आर्थिक विचारों पर प्रभुत्व स्थापित किए रहे। स्मिथ की आर्थिक अहस्तक्षेप-नीति को डेविड रिकार्डो (1772-1823) तथा थॉमस माल्थस (1776-1834) ने आगे बढ़ाया। तथापि, स्मिथ के विचारों के विपरीत रिकार्डो ने समाज को एक ऐसे अत्यधिक प्रतिस्पर्धी क्षेत्र के रूप में देखा जहाँ पर श्रमिक अपनी मजदूरी से बहुत कुछ प्राप्त नहीं करने वाले थे। मजदूरी के कठोर नियम के बारे में उनकी समझ बताती है कि श्रमिकों के निर्वाह को बढ़ाने के सभी प्रयास विफल होंगे। उनके दृष्टिकोण से मुनाफे को अधिकाधिक बढ़ाने में पूँजीपतियों की नीतियों से भयंकर प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी जो शायद बहुत उत्पादक नहीं होगी और मुनाफे को घटा देगी। अपनी पुस्तक *'दि प्रिंसिपल्स ऑफ पॉलिटिकल इकॉनामी एण्ड टैक्सेशन'* में रिकार्डो ने संरक्षणवादी नीतियों और वेतन में बढ़ोतरी के विरुद्ध वकालत की। थॉमस माल्थस भिन्न कारणों से पूँजीवाद के विरुद्ध निराशा से भरे थे। अपने निबंध *'एस्से ऑन दि प्रिंसिपल्स ऑफ पॉपुलेशन ऐज़ इट अफेक्ट्स दि फ्यूचर इम्प्रूवमेन्ट ऑफ सोसायटी'* में माल्थस ने बढ़ती हुई जनसंख्या के खतरे के प्रति आगाह किया। उनका मानना था कि अगर जनसंख्या को नियंत्रित नहीं किया गया तो वह ज्यामितीय अनुपात के नियम से बढ़ेगी जबकि जीवनयापन के साधन केवल अंकगणितीय अनुपात के रूप से बढ़ेंगे। अतः बढ़ती जनसंख्या मनुष्य की प्रसन्नता के मार्ग में बाधक रहेगी क्योंकि उत्पादन हमेशा जनसंख्या की बढ़ोतरी से कम रहेगा। पूँजीवाद की विजय के समर्थन में शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों के विचारों के ऊपर लिखते हुए ई.जे. हॉब्सबाम का अवलोकन है कि वह व्यक्ति जो प्रगति के पथ पर भूतकाल द्वारा निर्मित अवरोधों को हटाना चाहते थे, वे 'व्यापारियों के निहित हितों के विशेष वकील नहीं थे। वे वह व्यक्ति थे जिनका विश्वास था कि इस समय के विचारणीय ऐतिहासिक औचित्य के अनुसार मानवता के लिए आगे बढ़ने का रास्ता पूँजीवाद से होकर ही गुजरता था।' यद्यपि, वास्तविक जीवन में पूँजीवाद के सामाजिक तथा आर्थिक परिणाम शास्त्रीय अर्थशास्त्रियों द्वारा परिकल्पनाओं की तुलना में कम संतोषजनक निकले।

बोध प्रश्न 2

1) आपके विचार में उपयोगितावादी दर्शन का प्रमुख केन्द्र बिन्दु क्या था?

....

....

....

....

....

2) लगभग सौ शब्दों में अहस्तक्षेप-नीति सिद्धांत के केन्द्रीय तर्क की व्याख्या कीजिए।

....

....

....

....

....

4.4 समाजवाद

कुछ अन्य विचारक थे जो उदारवादी विचारधारा को लेकर संशय में थे तथा उदारवादियों द्वारा निर्मित विकास के तरीकों को लेकर शंकाग्रस्त। विकास और साझा स्वामित्व के एक नए विचार पर आधारित नई विचारधाराएं स्वार्थी व्यक्तिवाद और वैयक्तिक प्रसन्नता के विरुद्ध थीं। सेंट-सिमोन, चार्ल्स फ्यूरिए और रॉबर्ट ओवेन ने इस नए चिंतन प्रणाली का प्रतिनिधित्व किया और इन्हें आरंभिक समाजवादियों के रूप में जाना गया। उन्होंने तर्क दिया कि औद्योगिक समाज सिर्फ अन्यायपूर्ण ही नहीं था अपितु इसने गरीबों के हितों के विरुद्ध भी कार्य किया। यूरोप में समाजवादी विचारों के जन्म की तत्क्षण पृष्ठभूमि फ्रांसीसी क्रांति और औद्योगिक क्रांति ने प्रदान की। नई तकनीकों तथा उत्पादन के तरीकों के कारण यूरोप की आधारभूत सामाजिक संरचना तथा आर्थिक संबंध बदलने लगे। कार्य, श्रम, उत्पादन का महत्व तथा राजनीति और समाज से उनके संबंध आरंभिक समाजवादियों की प्रमुख चिंताएं थीं। वे सामाजिक असमानता, बालश्रम तथा गरीबों की पीड़ा से चिंतित थे। औद्योगिक पूँजीवाद के परिणामस्वरूप नई अर्थव्यवस्था कामगार वर्ग के लिए नई तरह की समस्याएं लेकर आई। परन्तु अपने आरंभिक चरण में समाजवाद नैतिक दर्शन से प्रभावित था। आरंभिक समाजवादियों ने पूँजीवाद पर हमला किए बिना दौलत के पुनर्वितरण के रास्तों की वकालत की। वे इस प्रकार की सामाजिक व्यवस्था की इच्छा रखते थे जिसमें विभिन्न वर्गों के बीच सौहार्द हो। वे शांतिपूर्ण तरीकों तथा तार्किक चर्चाओं द्वारा परिवर्तन लाना चाहते थे। वे सद्भावना रखने वाले लोगों के स्वैच्छिक प्रयासों द्वारा समाज में परिवर्तन लाने पर भरोसा करते थे। आरंभिक समाजवादियों को 'यूटोपियन (काल्पनिक) समाजवादी' (कार्ल मार्क्स तथा फ्रेडरिक एंगेल्स द्वारा) कहा गया क्योंकि आदर्शवादी, सामाजिक रूपांतरण में, भौतिकवादी दृष्टिकोण के विपरीत, उनका विश्वास था। आइए, आरंभिक समाजवादियों के प्रमुख विचारों से आपका परिचय कराएं।

सेंट-सिमोन (1760-1825) पेरिस में पैदा हुए थे और उनके विचार तत्कालीन समय के सामंती और सैन्य व्यवस्था द्वारा अनुकूलित थे। उन्होंने एक ऐसी पूँजीवादी व्यवस्था की वकालत की जिसमें उद्योग जगत सरकार द्वारा नियंत्रित होगा। उन्होंने समाज के एक ऐसे

पुनर्संगठन की कल्पना की जिसमें समाज का अभिजात वर्ग औद्योगीकरण की शांतिपूर्ण प्रक्रिया का नेतृत्व करेगा। उन्होंने एक ऐसे सामाजिक पदानुक्रम की वकालत की जिसमें व्यक्ति अपनी कार्य-क्षमता के अनुसार सामाजिक स्तर को प्राप्त करेगा। वे सामाजिक पदानुक्रम और निजी स्वामित्व के विरोध में नहीं थे। उन्होंने गरीब लोगों के शारीरिक और नैतिक सुधार के लिए समाज के पुनर्संगठन पर जोर दिया। सिमोन पूँजी और श्रम के बीच किसी प्रकार का टकराव नहीं देखते थे। सेंट-सिमोन के एक समकालीन, चार्ल्स फ्यूरिए (1772-1837) औद्योगिक क्रांति के प्रभावों के आलोचक थे। उन्होंने एक ऐसे समाज के निर्माण को समर्थन दिया जिसमें कृषकों का सामूहिक संगठन होगा जिसे उन्होंने 'फलांजीज' कहा उनकी 'थ्योरी ऑफ सोशल ऑर्गेनाइज़ेशन' में फ्यूरिए ने कहा कि 'स्वतंत्रता का आनंद जब तक सभी द्वारा न लिया जाए, अवास्तविक और भ्रामक है, स्वतंत्रता को सुरक्षित करने के लिए एक सामाजिक व्यवस्था आवश्यक है जिसका कार्य होगाः (1) उद्योगों के लिए एक व्यवस्था को ढूंढना और व्यवस्थित करना; (2) प्रत्येक व्यक्ति को उनके प्राकृतिक अधिकारों के समतुल्य आश्वासन देना; और (3) धनी और गरीब के हितों को संबद्ध करना। उनका मानना था कि केवल इन्हीं स्थितियों के आधार पर जनता कम से कम सुविधापूर्ण आजीविका और सभी सामाजिक सुखों का आनंद सुरक्षित कर सकती है।' कामगार वर्ग की दुर्दशा के प्रति चिंता के कारण वह कार्य को आनंददायक बनाना चाहते थे। फ्यूरिए का विश्वास था कि छोटे समुदायों पर आधारित समाज का पुनर्गठन, जिसे 'फालनस्टेरी' कहा गया, जो लोगों की सुख की इच्छा को संतुष्ट करेगा। दूसरे सामाजिक विचारक थे रॉबर्ट ओवेन (1771-1858) जिन्होंने ब्रिटेन में गरीबों पर औद्योगीकरण के प्रभाव को करीब से देखा था। वह औद्योगीकरण के विरुद्ध नहीं थे परंतु उन्होंने कामगार वर्ग के जीवन में पैतृक सत्तावादी सुधार की वकालत की। ईसाइयत और परंपरा को नकारते हुए उन्होंने तर्क-शक्ति और प्राकृतिक विधान में विश्वास किया और यह आशा की कि पर्यावरण के बदलने के साथ मानवीय प्रकृति भी बदली जा सकती है। वह स्वयं एक उद्यमी तथा समाज सुधारक थे। अपने सूती कपड़े की मिलों के प्रबंधन तथा उत्पादन से संबंधित कठिनाइयों के स्वयं के अनुभवों के आधार पर रॉबर्ट ओवेन ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति 'ए न्यू व्यू ऑफ सोसायटी' शीर्षक से निबंधों के रूप में की। उन्होंने लिखा, 'मनुष्य जन्म से ही प्रसन्नता हेतु स्वहित की इच्छा द्वारा प्रेरित है; उसके पास प्राकृतिक, ईश्वरप्रदत्त अभिरुचियाँ तथा मानसिक दशाएं हैं जो उसके कार्यों और विचारों को निर्देशित तथा विकसित करती हैं; वह अपने आसपास के वातावरण तथा अपने से बड़ों के निर्देशों से प्रभावित हैं और ये बदले में उसके कष्ट अथवा प्रसन्नता की सीमा को निर्धारित करते हैं। यदि उसके द्वारा प्राप्त किया गया ज्ञान तार्किक सत्य पर आधारित है, तो वह प्रसन्नता का अनुभव करेगा। वह तर्क-शक्ति और शिक्षण पर निर्भर होने के लिए मजबूर है। अतार्किक दिशा-निर्देश केवल तर्क-शक्ति को भ्रमित करते हैं तथा विसंगतियों, बुराइयों, तथा कष्टों का कारण बनते हैं। शासित और शासकों को प्रसन्न करना ही शासन का लक्ष्य है। सभी अस्तित्वों की प्राथमिक और आवश्यक मान्यताएँ हैं प्रसन्न रहना, परन्तु प्रसन्नता व्यक्तिगत रूप से प्राप्त नहीं की जा सकती; पृथक् प्रसन्नता की अपेक्षा करना अनुपयोगी है; सभी को इसमें हिस्सा लेना चाहिए, नहीं तो कुछ इसका आनंद कभी भी नहीं उठा पाएंगे।' आरंभिक समाजवादियों से असहमत होते हुए कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंगेल्स ने प्रस्तावित किया कि पूँजीवादी समाज में पूँजीवादियों और कामगार वर्ग के बीच बढ़ती दूरी वर्ग संघर्ष को जन्म देगी तथा केवल वर्ग संघर्ष के ज़रिए ही श्रमिक अपने अधिकारों को स्थापित कर पाएंगे। उनके विचार 1848 में प्रकाशित *'कम्यूनिस्ट घोषणापत्र'* में प्रस्तुत किए गए। हम इस इकाई में साम्यवाद के विकास को स्पष्ट नहीं करेंगे। इस संदर्भ में यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि आरंभिक समाजवादियों द्वारा प्रस्तुत ऐसी विश्व-दृष्टि कि जिसमें सभी प्रसन्न होंगे, वास्तविकता से काफी दूर थी। यह कार्ल मार्क्स थे, जिन्होंने समाजवाद को नया अर्थ दिया तथा पूँजीवाद को उखाड़ फेंकने के लिए सर्वहारा क्रांति की वकालत की।

बोध प्रश्न 3

1) क्या यह कहना सही है कि आरंभिक समाजवादियों ने वर्ग-संघर्ष की वकालत नहीं की?

....

....

....

....

....

2) लगभग 150 शब्दों में आरंभिक समाजवादी चिंतकों के योगदान के बारे में लिखिए।

....

....

....

....

....

4.5 सारांश

अठारहवीं सदी के मध्य से लेकर उन्नीसवीं सदी के मध्य तक यूरोप प्रमुख राजनीतिक घटनाक्रमों और चर्च की सत्ता एवं निरपेक्ष राजतंत्र के विरुद्ध बढ़ती चुनौतियों का गवाह बना। यही समय था, जब विचारों के क्षेत्र में महत्वपूर्ण नए विचार जन्म ले रहे थे। वैज्ञानिक खोजों तथा तर्क देने की शक्ति की भावना ने उस समय के कई बुद्धिजीवियों को पुरातन ज्ञान पर प्रश्न उठाने और अस्तित्वमान सामाजिक-राजनीतिक एवं आर्थिक व्यवस्था को बदलने हेतु नए तरीकों को लक्षित करने के लिए प्रेरित किया। हम आपको प्रबोधन तथा किस प्रकार प्रबोधनकालीन विचारकों ने तर्क-शक्ति को विश्वास के ऊपर प्रमुखता दी, इसके बारे में स्पष्ट कर चुके हैं। इस समय के राजनीतिक दार्शनिकों ने प्रगति की नई विचारधारा नियत की जो तार्किक और धर्म-निरपेक्ष थी। उनका विश्वास था कि मनुष्य तर्क-शक्ति के सिद्धांतों के अनुसार एक बेहतर विश्व का निर्माण कर सकता है। शास्त्रीय उदारवाद ने असीमित व्यक्तिगत स्वतंत्रता और प्रसन्नता के बारे में बात की, और इसे प्रत्येक व्यक्ति का उच्चतम लक्ष्य माना गया। उपयोगितावादियों ने धार्मिक विश्वासों, परंपराओं और दार्शनिक अमूर्तता को अज्ञान एवं अंधविश्वास का कारण माना तथा मानव व्यवहार के वस्तुनिष्ठ अध्ययन पर बल दिया। समाज से अपेक्षा की गई की अधिकतम जनसंख्या की अधिकतम प्रसन्नता को प्राप्त करने हेतु कार्य करे। इसके आर्थिक विचारों में उदारवाद के प्रवक्ता संपत्ति, मुक्त व्यापार तथा मुक्त बाज़ार के पक्षधर थे। औद्योगिक क्रांति के परिणामस्वरूप गरीब जनता के कष्टों से प्रभावित होकर आरंभिक समाजवादियों ने प्रतियोगिता के बजाए सहयोग पर आधारित समाज की वकालत की। सेंट-सिमोन, फ्यूरिए तथा ओवेन ने नई सामाजिक व्यवस्था के लिए तर्क दिया जहाँ वस्तुओं का उत्पादन तथा वितरण समाज की भलाई हेतु नियोजित किया जाए। इस प्रकार अठारहवीं सदी केमध्य से उन्नीसवीं सदी के मध्य की अवधि से ही हम पाते हैं कि जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में बुद्धिजीवियों ने, जिस दुनिया में वे रहे थे उससे अलग अपनी समझ के अनुसार, सामाजिक-राजनीतिक और आर्थिक व्यवस्था का एक नवीन रूप प्रस्तावित किया।

4.6 शब्दावली

पूँजीवाद : एक आर्थिक व्यवस्था जिसमें उत्पादन तथा वितरण पर एक व्यक्ति और निजी कंपनियों का स्वामित्व हो। यह मुक्त बाजार, खुली प्रतियोगिता और मुनाफे को प्रोत्साहित करता है।

दैवीय अधिकार राजतंत्र : दैवीय अधिकार राजतंत्र कहता है कि राजा ईश्वर द्वारा चयनित होता है और वह देश पर शासन करने हेतु अपनी सत्ता केवल ईश्वर से प्राप्त करता है। ईश्वर के अतिरिक्त राजा की शक्ति कोई नहीं छीन सकता।

सामंतवाद : एक आर्थिक व्यवस्था जिसमें कृषि ही धन का स्रोत है। सामंतवाद में राजनीतिक शक्ति पर ज़मींदारों का एकाधिकार होता है और समाज पदानुक्रम के अनुसार व्यवस्थित होता है।

औद्योगिक क्रांति : ब्रिटेन में 18वीं सदी के उत्तरार्द्ध के दौरान तकनीक में हुए अभूतपूर्व परिवर्तनों के फलस्वरूप नाटकीय आर्थिक परिवर्तनों को औद्योगिक क्रांति के नाम से जाना जाता है। औद्योगिक क्रांति ब्रिटेन के बाद यूरोप के अन्य देशों तक फैल गई।

वाणिज्यवाद : एक आर्थिक व्यवस्था जिसने धन प्राप्त करने हेतु व्यापार के सरकारी निर्देशन और अन्य वाणिज्यिक हितों को प्रोत्साहित किया। इस आर्थिक विचार ने 15वीं सदी से 18वीं सदी तक यूरोप पर अपना वर्चस्व स्थापित किया।

4.7 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) देखिए भाग 4.2
2) भाग 4.2 का अध्ययन करें, तत्पश्चात् ज्ञानोदयकालीन चिंतकों के प्रमुख विचारों को अपने शब्दों में अभिव्यक्त करें।

बोध प्रश्न 2

1) देखें उप-भाग 4.3.1
2) देखें उप-भाग 4.3.2

बोध प्रश्न 3

1) भाग 4.4 का अध्ययन करें।
2) भाग 4.4 के अध्ययन के पश्चात आरंभिक समाजवादियों के प्रमुख विचारों पर अपना उत्तर केंद्रित करें।